जीवन क्या है ?

पवन कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की।

जब से मनुष्य इस पृथ्वी पर अस्तित्व में आया है तभी से लोग जीवन को परिभाषित करने में लगे हैं। समय के साथ जीवन शैली में परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जब जैसा जिसने अनुभव किया ा करने में लगे हैं। समय के साथ जीवन शैली में परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जब जैसा जिसने अनुभव किया इसकी परिभाषा दी। किसी ने कहा संघर्ष ही जीवन है, तो दूसरे ने कर्म को जीवन माना। जीवन में मधु भी है, विष भी है और अमृत भी है, बस इसकी पहचान होनी चाहिए। गीता हमें संदेश देती है कि संसार में सब कुछ तेरा होते हुए भी तेरा नहीं है, तो इन नश्वर वस्तुओं के पीछे हम अपना सुख-चैन क्यों नष्ट करें? जो ईश्वर है उसी में अपने मन को रमायें। यह जीवन फूल और काँटो से भरा एक गुलशन है। हमें बिना किसी पक्षपात के दोनों को स्वीकार करना चाहिए। यहाँ कदम-कदम पर पथ भ्रष्ट करने के साधन मिलते हैं। आवश्यक यह है कि हम रावण को अपने ह्रदय से निकालकर शिवत्म को धारण करें।

जीवन जीना भी एक कला है। सभी अपने ढंग से जीवन में आचरण कर उसे सफल बनाने की चेष्टा करते हैं। सभी का ध्येय जीवन में परमानन्द की प्राप्ति करना होता है किन्तु कुछ बिरले व्यक्ति ही अपनी वासनाओं व इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर जीवन को आनन्दमय बना पाते हैं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को अपनाकर ही जीवन को आनन्दमय बनाया जा सकता है ।

जीवन वस्तुतः एक अनबूझ पहेली है, जिसके अनगनित उत्तर हैं - श्रुति के अनुसार :-

"जीवन एक संग्राम है"। इस जीवन में वही विजयी हो सकता है जो सीना तानकर आपदाओं का मुकाबला कर सकता है। विपदाओं की घनघोर घटाओं को बिजली की तरह मुस्कुराकर सहन करता है। परिस्थितियों का दास न बनकर उसका स्वामी बनता है तथा जो टूट जाना पसन्द करता है पर झुकता नहीं है।

जीवन को ताश के खेल की संज्ञा दी है। जिस प्रकार ताश के खेल के नियम हमने खुद नहीं बनाये तथा न ताश के पत्तों के बटवाँरे पर नियंत्रण रख सकते हैं, वैसे ही जीवन की व्यवस्थायें भी हमारी बनाई हुई नहीं है। पत्ते हमें बॉट दिये जाते हैं, चाहे वह अच्छे हों या बुरे, उसी तरह एक जीवन हमें जीने के लिये दे दिया गया है।

इस सीमा तक तो नियतिवाद का शासन है परन्तु इसके बाद कार्य की ही प्रमुखता है खेल को अच्छे ढंग से या खराब ढंग से खेलना हमारे कौशल पर निर्भर करता है। हो सकता हे कि कुशल खिलाड़ी के पास भी खराब पत्ते आ जायें फिर भी अपनी बुद्धि कौशल से वह जीत सकता है। यह भी संभव है कि खराब खिलाड़ी के पास भी अच्छे पत्ते आ जायें तो खेल का सही ढंग न जानने के कारण वह हार जाये। वस्तुतः जीवन को अच्छा बुरा बनाना अपने हाथ में है ताकि उसकी सफलता देख दूसरे भी उसका अनुसरण करें।

यदि जीवन को पाना चाहते हो तो घर-घर प्रेम का दीपक जलाना ही होगा। समाज को परिवार मानकर **वसुधैव कुटुबंकम** की भावना को विस्तार देना मानवता की प्रथम आवश्यकता है। जीवन केवल अपने लिये ही नहीं, इससे जुड़े अनेक मनुष्यों के संबंधों का इमानदारी से निवर्हन करना जीवन की सार्थकता है।

अधिकतर मनुष्यों का मानना है कि सुख का मूल स्रोत सांसारिक भोग विलास है न कि आघ्यात्मिक जीवन जीने में। इसलिए हम अपना अधिकांश समय सांसारिक भोग विलास और विषय वासना की खोज में बिता देते हैं यह सम्भव है कि संसार में रहकर भौतिक गतिविधियों में शामिल न हुआ जाये। सच तो यह है कि धन-सम्पत्ति अर्जित करना कोई पाप नहीं बल्कि यह जीवन-यापन के लिये जरूरी भी है। वेदों में कहा गया है कि **संसार को भोगो परन्तु निर्लिप्त होकर, निष्काम भाव से।** वास्तव में मनुष्य को प्रत्येक प्रकार से भोग की आज्ञा है। वह भोग अवश्य करे परन्तु इसे ईश्वर का प्रसाद समझ कर भोग करे।

तुम्हारा कुछ भी नहीं है जो कुछ भी है वह उस शक्तिमान ईश्वर का है लेकिन एक आम इन्सान सांसारिक कार्य में उलझकर भी अपने जीवन को आध्यात्मिक साँचे में ढाल लें तो उसे अन्त में सच्चा सुख मिल सकता है। अर्थात् - **आप सांसारिक सुख भोगते जायें, परन्तु त्याग भाव से।** गीता का **अनासक्ति भोग और कर्मयोग भी इसी धारणा पर आधारित है।**

हमारे जीवन का ध्येय आनन्द है लेकिन आनन्द प्राप्त करने के लिए मनुष्य को पाप कार्य नहीं करना चाहिए। वास्तव में लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये किये जाने वाले कार्य का सुख क्षणभंगुर होता है, लेकिन जीवन के वास्तविक सुख के स्रोत अध्यात्म को पाने के लिए मनुष्य को साधना करनी पड़ती है।

अनेकों विद्वानों, लेखकों, दार्शनिकों की दृष्टि में जीवन :-

- एक सुहावना स्वप्न है, जो आँख खुलते ही टूट जाता है।
- एक बुलबुला, जो बाहर से चमकदार तथा भीतर से खोखला है।
- एक कटु सत्य है, जिसका सामना बिरले ही कर पाते हैं।
- एक लहर है, जो प्रत्यक्ष में तो मनोहारी परन्तु अन्दर से खाली है।
- एक खट्टा मीठा अनुभव है, जिसका लाभ दोबारा उठाना कठिन होता है।
- एक ऐसी वस्तु है, जिसका आदि और अन्त दोनों तृष्णा में ही होते हैं।
- एक चुनौती है जो कुछ कर गुजरने की प्रेरणा पाते है।
- एक ज्ञान है जिसका अन्त वैराग्य होता है।
- एक साहित्य है, जिससे दूसरे प्रेरणा पाते है।
- जीवन एक भंवर है जिसमें पहले तो प्राणी तेजी से घूमता है और फिर यकायक डूब जाता है।
- एक सतत संघर्ष, आकांक्षाओं के बीच झूलता एक झीना सा आचरण।
- दुखों के सुलगते ढेर पर सुखों की खीर, यातनाओं की अनन्त कहानी।
- सुख प्रतीत कराने वाली एक लोरी।

- स्वप्न और जागरण के मध्य एक अनमनी स्थिति।
- जन्म व निर्वाण के मध्य खिंची हुई एक अनवरत रेखा।
- एक सुन्दर फूल है स्नेह उसका पराग है।

जीवन में करने योग्य महत्वपूर्ण कार्य :

- जीवन एक दावा है - सामना करो।
- जीवन एक संघर्ष है - स्वीकार करो।
- जीवन एक आनन्द है - फैलाव करो।
- जीवन एक व्यथा है - विजय प्राप्त करो।
- जीवन एक रहस्य है - प्रकट करो।
- जीवन एक दुखान्त है - विरोध करो।
- जीवन एक प्रेम है- प्यार करो।
- जीवन एक कर्तव्य है - पालन करो।
- जीवन एक जुआ है - सचेत रहो।
- जीवन एक गीत है - गाते रहो।
- जीवन एक मोक्ष है - प्राप्त करो।
- जीवन एक कल्पना है - उपयोग करो।
- जीवन एक सपना है - साकार करो ।
- जीवन एक रूप है - प्रशंसा करो।
- जीवन एक सफर है - पूरा करो।
- जीवन एक वादा है - पूर्ण करो।
- जीवन एक पहेली है - हल करो।
- जीवन एक ईशोपहार है - पोषण करो।
- जीवन एक सहाय है - साहस करो।
- जीवन एक अवसर है - जाने मत दो।

******